को तैय कर रखा है। (इब्ने अबी शैबा)

इस हदीस से बात और साफ़ हो जाती है कि मलाकुल मौत जब किसी ईमान वाले की रूह निकालने के लिए 500 फ़रिश्तों के साथ आते हैं, तो उस वक़्त उनके हाथ में रिहान के फूलों का गुल–दस्ता होता है जिसकी हर टहनी में बीस–बीस रंग के फूल होते हैं और हर फूल में नई खुश्बू होती है। इसके साथ एक सफ़ेद रंग का रूमाल जिसमें मुश्क़ बंधी होती है, उसे मरने वाले की ठोड़ी के नीचे रखते हैं फिर जन्नत का वह कपड़ा जिसको कफ़न में इस्तेमाल करते हैं वह भी साथ होता है। इतनी सारी चीज़ों को मरने वाले के सिवा पास में बैठा हुआ कोई इंसान भी नहीं देख पाता। अब अगर ये सारी चीज़ें कायनात में फैली हुई शक्लों से निकलकर आती तो हर इंसान को ये चीज़ें नज़र आ जाती, लेकिन आसमान के ऊपर से इन चीज़ों को लाने वाले फ़रिश्ते इंसान को कभी नज़र नहीं आते। इसी तरह जब हज़रत हंज़ला रज़ि० को फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया गुस्ल से पहले फ़रिश्तों का लाया हुआ पानी किसी को नज़र नहीं आया पर जब हज़रत हंज़ला रज़ि० के जिस्म पर पानी गुस्ल के लिए डाला तो हज़रत हंज़ला रज़ि० के जिस्म के बालों से पानी टपकना सहाबा रज़ि० को नज़र आया।

इसलिए मेरे मुहतर्म दोस्तों और बुज़ुर्गो! किसी शक्ल में अपने अंदर कुछ बनाने की कुदरत नहीं है।

कायनात में फैली हुई शक्लों के अंदर और अलग–अलग चीज़ों को निकालकर, अल्लाह तआला हम इंसानों को अपनी पहचान कराना चाहते हैं, कि अल्लाह तआला ने कायनात की सारी शक्लों को सिर्फ़ अपनी पहचान कराने के लिए बनाया है। कि–

जानवरों से दूध,
खेत से गल्ला और सब्ज़ियां,
पेड़ों से फल और मेवे,
शहद की मक्खि से शहद,
सूरज से रोशनी और
बादल से पानी

ये सारी की सारी शक्लों से निकलने वाली चीजें, आसमानों के ऊपर मौजूद अल्लाह के खज़ानों से भेजी जा रही हैं। जिस तरह टेलीविज़न के डब्बों के अंदर से, मोबाइल से, इंटरनेट (*internet*) वगैरह से कभी हमें खबरें कभी हॉकी या क्रिकेट का मैच या दीगर प्रोग्राम निकलते नज़र आते हैं यह नज़र आने वाले प्रोग्राम इन चीज़ों में बनते नहीं हैं, बल्कि ये प्रोग्राम इन चीज़ों के मरकज़ (*Studio*) से इनमें भेजे जा रहे हैं। पर किसी इंसान को यह प्रोग्राम हवा में आते हुए दिखते नहीं हैं। देखो आपने अपने मोबइल से या इंटरनेट (*internet*) से किसी को मैसेज (*Message*) या ई–मेल (*E-mail*) भेजा आपने जिसके पास भेजा है, उसके मोबइल या इंटरनेट को ढूंढकर उसमें दाख़िल हो जाता है। चाहे वह आदमी आंख से एक हज़ार किलोमिटर दूर रह रहा हो, पर सैकण्ड में वहां पहुंच जाता है और जो मैसेज या ई–मेल आपने भेजा है, उसका एक हुर्फ़ भी उसमें से कम नहीं होता। ज़रा बैठकर ग़ौर करो, कि हर वक़्त हवा में कितने मैसेज आते जाते रहते हैं। कितनी तस्वीरें मैसेज या ई–मेल से भेजते रहते हैं, पर जिसके पास जो भेजा जाता है, वही उसे मिलता है किसी दूसरे का मैसेज या किसी दूसरे का ई–मेल बदलता नहीं है। ठीक उसी तरह हमारी रोज़ियों का मामला है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कोई इंसान चाहे क़िले और चूने के पहाड़ों में बंद हो जाए, मगर दो चीज़ें उसके पास पहुंचकर रहेंगी।

1. उसकी रोज़ी,
2. उसकी मौत,

यानी अगर कोई इंसान अपने आपको लोहे के संदूक़ में बंद करके अंदर से ताला लगा ले, फिर भी उसकी रोज़ी और उसके जिस्म से रूह निकालने वाला फ़रिश्ता उस संदूक़ के अंदर पहुंच जाएगा, जिस तरह अंडे के छिलके के अंदर रंग–बिरंगे पर, खून, गोश्त और रूह पहुंच जाती है।

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला इस ज़ाहिरी निज़ाम से हमें ग़ैबी निज़ाम समझाना चाह रहे हैं, अपनी ताक़त और अपनी क़ुदरत को समझाना चाह रहे हैं, कि हर मख़्लूक़ की रोज़ी आसमानों के ऊपर से भेजी जा रही है, पर हमारे इम्तिहान के

लिए, वे चीज़ें हमें आसमानों से आती हुई नज़र नहीं आ रही हैं। अल्लाह तआला ने ज़ाहिरी निज़ाम, अपने बंदों के इम्तिहान के लिए बनाया है और गैबी निज़ाम बंदों के इत्मिनान के लिए बनाया है। लेकिन गैबी निज़ाम से फ़ायदा वे उठा पाएंगे, जिसने अपने अंदर गैब का यक़ीन पैदा किया होगा। जो इंसान अपने अंदर गैब का यक़ीन पैदा कर लेता है तो फिर फ़रिश्तों के ज़रिए से चलाया जा रहा गैबी निज़ाम उसके ताबेअ कर दिया जाता है। अब यह गैबी निज़ाम किसी के ताबेअ हो जाए, तो सबसे पहले अहादीस की रोशनी में इस निज़ाम को समझा जाए।

हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः मोमिन के साथ 360 फ़रिश्ते होते है, जो मुसीबत उस पर पड़नी नहीं होती, उसको इससे दूर करते रहते हैं।

सिर्फ़ आंख के लिए 7 फ़रिश्ते हैं। ये फ़रिश्ते बलाओं को उससे इस तरह हटाते रहते हैं, जिस तरह गर्मी के दिनों में शहद के प्याले से मक्खियों को हटाया जाता है। अगर उन फ़रिश्तों को तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर दिया जाए, तो तुम उनको मैदान और पहाड़ पर हाथों को खोले हुए देखोगे। (तबरानी)

जबकि आम इंसान के साथ 10 फ़रिश्ते होते हैं पर औरतों के साथ ग्यारह फ़रिश्ते होते हैं।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० फ़रमाते हैं, कि मैंने एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हर इंसान के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः कि एक फ़रिश्ता तेरे दाएं में है जो तेरी नेकियों पर मामूर है तो एक फ़रिश्ता बाएं तेरा गुनाह लिखता है, यह दाएं वाला फ़रिश्ता बाएं वाले फ़रिश्ते का सरदार है।

दो फ़रिश्ते तेरे सामने और पीछे हैं, ये दोनों बलाओं और मुसीबतों से तेरी हिफ़ाज़त करते रहते हैं।

एक फ़रिश्ते ने तेरी पेशानी को थामा हुआ है जो तवाज़ोह करने पर तेरा सर को बुलंद कर देता है और तकब्बुर करने पर पस्त कर देता है।

दो फ़रिश्ते तेरे होंठों पर है, जो दुरूद व सलाम को पहुंचाते हैं।

एक फ़रिश्ता तेरे मुंह पर है, जो सांप और दूसरे कीड़े को तेरे मुंह में घुसने नहीं देता और दो फ़रिश्ते तेरी आंखों पर है। (इब्ने जरीर)

देखो! नीचे लिखी जा रही हदीस पर ग़ौर करो कि किस तरह से फ़रिश्तों के ज़रिए से चलाया जा रहा ग़ैबी निज़ाम, मोमिन की हिमायत में आ जाता है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो लोग कसरत से मस्जिदों में जमा रहते हैं, वही लोग मस्जिद के खूटें हैं। इन लोगों के साथ फ़रिश्ते भी बैठे रहते हैं, अगर वे लोग मस्जिदों में किसी वजह से मौजूद न हो, तो फ़रिश्ते उन लोगों को ढूंढते हैं। जब कभी वह बीमार हो जाते हैं, तो फ़रिश्ते उनके घर जाकर उनकी बीमार पुर्सी करते हैं और जब वह लोग अपनी किसी ज़रूरत के लिए घर से बाहर आते हैं तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जुम्आ के दिन फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर मस्जिद में आने वालों का नाम लिखते रहते हैं। लेकिन जब ख़ुत्बा शुरू होता है, तब, फ़रिश्ते नाम लिखना बंद करके ख़ुत्बा सुनने में मश्ग़ूल हो जाते हैं। (बुखारी)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब कोई मुसलमान जंगल में इक़ामत कहकर नमाज़ पढ़ता है तो दोनों फ़रिश्ते (करामन कातिबीन) उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं। अगर कोई मुसलमान जंगल में आज़ान दे और फिर इक़ामत कहकर नमाज़ शुरू करे, तो उसके पीछे फ़रिश्तों की इतनी बड़ी तायदाद नमाज़ पढ़ती है, जिनके दोनों किनारे देखे नहीं जा सकते। (मुस्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हज़रत औस अंसारी से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ईद की सुबह अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दुनिया के तमाम शहरों में भेजते हैं वे ज़मीन पर उतरकर तमाम गलियों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और आवाज़ देकर कहते हैं, जिसे इंसान और जिन्नात के सिवा सारी मख़्लूक़ सुनती है कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत! इस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो, जो ज़्यादा अता करने वाला है। फिर लोग ईदगाह की तरफ़ जाने

लगते हैं। (तबरानी)

हज़रत शद्दाद बिन औस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो मुसलमान कुरआन की कोई सूरः बिस्तर पर जाकर पढ़ लेता है, तो अल्लाह पाक उसकी हिफ़ाज़त के लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देते हैं, जो उसके जागने तक उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत माकूल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूरः बक़र की तिलावत करने पर उसकी हर आयत के साथ 80 फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं (मुस्नद अहमद)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो मुसलमान रात को ब-वुज़ू सोता है तो एक फ़रिश्ता उसके जिस्म के साथ लगकर रात गुज़ारता है। रात में जब भी वह नींद से बेदार होता है, तो वह फ़रिश्ता उसे दुआ देता है-कि ऐ अल्लाह! अपने इस बंदे की मग़फ़िरत फ़रमा दे क्योंकि ब-वुज़ू सोया था। (इब्ने हब्बान)

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते, जिस घर में कुत्ता या तस्वीरें हों। (इब्ने माजा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि रहमत के फ़रिश्ते उन लोगों के पास भी नहीं रहते, जिनके पास कुत्ता या घंटी हो। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया दुश्मन के ख़िलाफ़ मुक़ाबला करते वक़्त फ़रिश्ते घुड़ सवारी और तीरअंदाज़ी में तुम्हारे साथ होते हैं। (तबरानी)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो हाजी सवारी से हज करने जाते हैं, फ़रिश्ते उनसे मुसाफ़ा करते हैं और जो लोग पैदल हज करने जाते हैं फ़रिश्ते उनसे गले मिलते हैं। (बैहक़ी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते जुम्अ के दिन पगड़ियां बांधकर (जुम्आ की नमाज़ में) हाज़िर होते हैं और पगड़ी वालों को सूरज के छिपने तक

सलाम करते हैं (तारीखे इब्ने असाकिर)

देखो मेरे दोस्तो! एक है. गैब का इल्म होना और एक है गैब का यक़ीन होना कि गैब का इल्म किताबों के ज़रिए से या किसी से सुनकर हासिल हो जाता है. पर गैब का यक़ीन, कि उसे सीखकर अपने दिल में पैदा करना पड़ता है। इसलिए सहाबा रज़ि० कहते हैं, कि हमने पहले ईमान सीखा, फिर कुरआन सीखा, यानी पहले गैब का यक़ीन दिल में पैदा किया।

कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० जब बैतुलखला में दाख़िल होने का इरादा करते, तो अपनी चादर बिछा देते और फ़रमाते, ऐ मुहाफ़िज़ फ़रिश्तो! तुम लोग यहां इस चादर पर तश्रीफ़ रखो, क्योंकि मैंने अल्लाह तआला से अहद किया है, कि मैं बैतुलखला में कोई बात नहीं करूंगा। (मुकदमा अबू लैस)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं, कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं, बाएं के फ़रिश्तों से शर्म न आई, यह उस किए हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है। (कंजुल उम्माल, 8, 422)

गैब का यक़ीन

(1) एक ईमान– (اٰمَنَ بِاللّٰهِ)

यानी इस हक़ीक़त का पूरा यक़ीन के सब कुछ अल्लाह की ज़ात से बनता है और होता है, अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं बनता और होता है, इसलिए बस इसी को राज़ी करने की फ़िक्र करनी चाहिए इसी के लिए मरना–मिटना चाहिए।

(2) दूसरा ईमान–(وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ)

यानी इस हक़ीक़त का पूरा यक़ीन, कि यह ज़िंदगी असल ज़िंदगी नहीं है, बल्कि इस ज़िंदगी के पूरा होने के बाद एक दूसरी ज़िंदगी और दूसरा आलम है। और असल ज़िंदगी वही है, यह चंद रोज़ा ज़िंदगी बस उसकी तैयारी के लिए है और इंसानों की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार उसी हमेशा वाली ज़िंदगी और कामयाबी और नाकामी पर है।

(3) तीसरा ईमान– (وَالْمَلٰئِكَةِ)

यानी इस बात का यक़ीन कि यह आलम जिन ज़ाहिरी असबाब से चलता हुआ

नज़र आ रहा है, दरअसल इन अस्बाब से नहीं चल रहा है, बल्कि अल्लाह पाक फ़रिश्तों के बातिनी निज़ाम के ज़रिए से ज़ाहिर निज़ाम को चला रहे हैं। मिसाल के तौर पर हमें नज़र आता है कि बारिश बादलों और हवाओं से होती है और ज़मीन की चीज़ें बारिश के पानी से उगती हैं। फ़रिश्तों पर ईमान का मतलब यह है, कि हम इस बात का यक़ीन करें कि अल्लाह पाक ये सारे काम दरअसल फ़रिश्तों से करा रहे हैं। गोया उन ज़ाहिरी अस्बाब के पीछे फ़रिश्तों का नज़र न आने वाला निज़ाम है और उसके पीछे अल्लाह की ज़ात और उसका हुक्म और उसकी मुशय्यत है।

(4) चौथा ईमान– (وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ)

यानी अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबें और उसके भेजे हुए नबियों के बारे में यक़ीन, कि हक़ीक़ी इल्म वही है, जो अल्लाह की किताबों में है और नबियों के ज़रिए इंसानों को मिला है। उसके सिवा जो कुछ है, वह ग़ैर–हक़ीक़ी और नाकिस है मिसाल के तौर पर इंसानों की फ़लाह और कामयाबियों का रास्ता वहीं है जो अल्लाह के नबियों ने और अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबों ने बताया है। अगर दुनिया भर के फलोसफ़र (*philospher*) दानिशमंद, अक़्लमंद लोग और लीडर उसके ख़िलाफ़ कहते हैं और सोचते हैं तो ग़लत है उनका जहल है।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते हैं कि सारे हुक्म बाद में आए हैं सबसे पहला हुक्म, अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन क़ायम करने का आया। कि "आमना बिल्लाहि" कि अल्लाह की ज़ात का अपने दिलों में यक़ीन क़ायम करना, यह ईमान की जड़ और बुनियाद है। क्योंकि अल्लाह की ज़ात तो ग़ैब में है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवा अल्लाह की ज़ात को किसी मख़्लूक़ ने नहीं देखा, ख़ुद हज़रत जिब्रील ने भी नहीं। इसलिए जिब्रील बताते हैं, कि मेरे और अल्लाह के बीच नूर के 70 पर्दों की आड़ है। अगर उनमें से एक पर्दा भी हटा दिया जाए, तो अल्लाह की नूर की तजल्ली से मैं जलकर राख हो जाऊं तो अल्लाह की ज़ात को लेकर कहीं शक में न पड़ जाएं कि अल्लाह की ज़ात का ही इंकार न कर बैठे कि पता नहीं कि अल्लाह की ज़ात का वजूद है भी नहीं। इसलिए कि अब क़ियामत तक कोई नबी नहीं आने वाला। (हां, हज़रत ईसा अलै० दूसरे आसमान से उतरकर आना, ब–हैसियत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती का होगा) और यह एक मुस्तक़िल सवाल, इंसान के बीच रहता कि अल्लाह

की ज़ात है या नहीं बस इसी सवाल को ख़त्म करने के लिए ही अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अर्श पर बुलाकर अपना दीदार कराया, कि अल्लाह की ज़ात हक़ है।

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को खुद यह दावत दी है, कि वह अल्लाह पर ईमान लाएं, ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपनी हिमायत और हिफ़ाज़त में ले ले। (हैसमी, 5, 232)

मेरे दोस्तो! जो ज़ात हमेशा से थी और हमेशा रहेगी, उसने सबसे पहले हुक्म, अपने बंदों के मुताल्लिक़ जो नाज़िल फ़रमाया, वह यह है कि 'आमन्ना बिल्लाहि' अल्लाह की ज़ात का यक़ीन, अपने दिल में पैदा करो, अब सवाल यह पैदा होता है, कि किस तरह से अल्लाह की ज़ात का यक़ीन पैदा हो? तो अल्लाह की ज़ात का यक़ीन तभी पैदा होगा, जब हम अपनी ज़ात में ग़ौर व फ़िक्र करेंगे।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि कोई शख़्स उस वक़्त तक अल्लाह तआला को नहीं जान सकता, जब तक कि वह अपने आपको नहीं पहचान ले, कि–

(1) हम 500 साल पहले कहां थे।
(2) इस दुनिया में हम कहां से आए।
(3) हमारे जिस्म को किसने बनाया।
(4) कैसे बनाया।
(5) 100 साल बाद हम कहां होंगे, वग़ैरह, वग़ैरह इसलिए हमें कुरआन व हदीस की रोशनी में अपने आपको पहचानना है, कि हमें किसने बनाया? क्यों बनाया? कहां बनाया? और कैसे बनाया?

इंसान की पैदाइश

﴿وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: जब आपके रब ने आदम की पीठ से इसकी औलाद को पैदा किया फिर उनसे सवाल किया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सबने जवाब दिया बेशक! फिर हमने गवाह बनाया (फ़रिश्तों को) हमने यह इक़रार

(इंसानों से) इसलिए कराया, कि क़ियामत के दिन यह न कहने लगें, कि हमें पता नहीं था। (कि आप हमारे रब हैं)

(सूरः एहराफ़, 271)

हज़रत उबई बिन काब रज़ि० इस आयत की तफ़्सीर में बयान फ़रमाते हैं, कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै० के पीठ से इंसानों की रूह को निकाला और उन्हें एक जगह जमा किया, फिर

उन्हें जोड़ा–जोड़ा बनाया,
उसकी शक्लें बनाई,
उन्हें बोलने की ताक़त दी,
फिर सबसे सवाल किया कि मैं क्या तुम्हारा रब नहीं हूं?
सबने जवाब दिया, बेशक! आप ही हमारे रब हैं।

फिर इस इक़रार पर अल्लाह ने फ़रिश्तों को गवाह बनाया, ताकि क़ियामत के दिन इसमें से कोई यह न कहे, कि?

हमे पता नहीं था।

यक़ीन मानो "मेरे सिवा कोई माबूद और रब नहीं है" इसीलिए मेरी रबूबियत में किसी चीज़ को शरीक न करना। मैं तुम्हारे पास नबी और रसूल भेजता रहूंगा, जो तुम्हें वह अहद और पैमान याद दिलाएंगे और तुम पर अपनी किताबें उतारूंगा।

तो सबने जवाब दिया कि हम इक़रार कर चुके हैं, कि आप ही हमारे रब हैं, आप के सिवा हमारा कोई रब नहीं है।

(मुस्नद अहमद)

﴿هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا، إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: बेशक इंसान पर ज़माने में ऐसे वक़्त आ चुका है, कि वे भी क़ाबिले ज़िक्र न था, कि इससे पहले मनी था और उससे पहले वह भी न था। हमने इसको मख़्लूत नुत्फ़े से पैदा किया, ताकि हम इसका इम्तिहान लें, फिर हमने इसे सुनता, देखता बनाया। (सूरः अल–दहर)

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला जब किसी इंसान को इम्तिहान के लिए आलामे अरवा से इस दुनिया में मुंतिक़ल करना चाहते हैं, तो मुंतिक़ल करने से चार महीने पहले, एक मख़्सूस तरीक़े से उसकी मां के पेट में उसका जिस्म बनाना शुरू करते

हैं।

﴿مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ﴾

हमने इंसान के जिस्म को किस चीज़ से बनाया? मनी की एक बूंद से.एक ख़ास अंदाज़ में। फिर इसके लिए रास्ता आसान कर दिया। फिर उसे मौत देकर बर्ज़क में पहुंचा दिया। (सूरः अबास)

﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ﴾

हमने इंसान को बहतरीन अंदाज़ में ज़ाहिर किया। (सूरः तीन)

﴿مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى﴾

इसी मिट्टी से जिस्म बनाकर हमने तुम्हें (दुनिया) में ज़ाहिर किया और फिर इसी में लौटाएंगे और इसी से दूसरी बार ज़ाहिर करेंगे। (सूरः ताहा)

अल्लाह तआला जिस मिट्टी से इसका जिस्म बनाते हैं, इस मिट्टी के ज़र्रे ज़मीन से लेकर आसमान तक फैले हुए होते हैं। अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से इन ज़र्रों को इकट्ठा करके मां–बाप की गिज़ा के साथ उनके पेट में पहुंचाते हैं। मां–बाप के जिस्म में पहुंच चुके, उन ज़र्रों को फिर ख़ून में पहुंचाते हैं, ख़ून से मनी में मुंतक़ील करते हैं फिर मनी की इस बूंद को मां के पेट में मौजूद बच्चेदानी में पहुंचाते हैं।

﴿فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝ يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ﴾

इंसान को देखना (सोचना) चाहिए कि इसका जिस्म किस चीज़ से बना है? इसका जिस्म उछलते हुए पानी से बना है, जो पीट और सीने के बीच से निकलता है। (सूरः तारीक़)

﴿اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخَالِقُوْنَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: अच्छा यह तो बताओ, जो मनी जो तुम औरतों के रहम में पहुंचाते हो क्या तुम मनी से इंसान का जिस्म बनाते हो, या हम इस

जिस्म को बनाने वाले हैं?

(सूरः वाकिआ)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः नुत्फ़ा (मनी क बूंद) 40 दिन तक रहम में अपनी हालत में रहता है जब 40 दिन पूरे हो जाते हैं, तो वह जमा हुआ खून बन जाता है, फिर उसी तरह 40 दिन के बाद गोश्त की बोटी में तब्दील हो जाता है, फिर उसमें हड्डियां पैदा होती हैं फिर अल्लाह तआला जिस्म के सारे हिस्से बना देते हैं।

(मुस्नद अहमद)

﴿أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ﴾

अल्लाह का इर्शाद हैः भला हमने उसको दो आंखें नहीं दी?! और जुबान और दो होंठ नहीं दिए।

(सूरः बलद)

﴿إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि कोई इंसानी जिस्म ऐसा नहीं जिस पर हमने निगरानी करने वाला फ़रिश्ता मुक़र्रर न कर रखा हो, (सूरः तारीक़)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः अल्लाह तआला ने औरत की बच्चे दानी पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो बच्चे के बनने की अलग-अलग शक्लें अल्लाह से बताता रहता है। कि-

ऐ अल्लाह! अब यह नुत्फ़ा,
ऐ अल्लाह! अब यह जमा हुआ खून है,
ऐ अल्लाह! अब यह गोश्त का लोथड़ा है।

फिर जब अल्लाह उस बच्चे को पैदा करना चाहते हैं, तो फ़रिश्ता पूछता है कि ऐ अल्लाह! इसके बारे में क्या लिखूं?

लड़का या लड़की?
बद-बख़्त या नेक-बख़्त?
रोज़ी कितनी? और
उम्र कितनी। यानी यह रूह इस तरह जिस्म में कितने दिन रहेगी।

(बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि औरत की बच्चे दानी पर मुक़र्रर फ़रिश्ते का यह काम होता है, कि जब बच्चे की मां सोती है, या लेटती है, तो यह फ़रिश्ता उस बच्चे का सर ऊपर उठा देता है। अगर वह ऐसा न करे, तो बच्चा खून में गर्क़ हो जाए। (अबू शैख़)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब लड़की पैदा होती है तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो उस पर बहुत ज़्यादा बरकत उतारता है और कहता है, तू कमज़ोर है क्योंकि कमज़ोर से पैदा हुई है, उस लड़की की किफ़ालत (परवरिश) करने वाले की क़ियामत तक मदद की जाती है, और जब लड़का पैदा होता है, तो अल्लाह तआला उसके पास भी एक फ़रिश्ता भेजते हैं, जो उसके आंख के बीच बोसा लेता है और कहता कि अल्लाह तआला तुझको सलाम कहते हैं। (तबरानी)

मेरे दोस्तो! नुत्फ़ा (मनी का क़तरा) जब बच्चे दानी के अंदर पहुंच जाता है, तो बच्चे दानी का मुंह बंद हो जाता है, जिस तरह गुब्बारे के अंदर किसी चीज़ को डालकर फिर उसमें हवा भरकर, गुब्बारे का मुंह बंद कर दिया जाता है, पर बच्चे दानी में सिर्फ़ नुत्फ़ा डाला जाता है, हवा नहीं भरी जाती, जैसे जैसे बच्चे का जिस्म बनकर बढ़ता जाता है, बच्चे दानी बग़ैर हवा के, गुब्बारे की तरह फूलती जाती है, जिसकी वजह से मां का पेट फूलकर बड़ा होता रहता है। 40 दिन के बाद सफ़ेद रंग का नुत्फ़ा सुर्ख़ रंग का जमा हुआ खून बन जाता है।

जिस तरह फ़िरऔन के पीते हुए पानी को ख़ून में बदल दिया था।

जिस तरह 40 दिन के बाद इस जमे हुए ख़ून को अल्लाह तआला गोश्त के लोथड़े में बदल देते हैं। जिस तरह फ़िरऔन के हाथ में पकड़े हुए रोटी के टुकड़े को मेंढक में बदल दिया था।

या जिस तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के यहां प्याले में रखे हुए गोश्त को पत्थर में बदल दिया था।

और हज़रत मूसा अलै० का मशहूर वाक़िआ है कि जिसे अल्लाह तआल ने क़ुरआन में बयान फ़रमाया है कि हज़रत मूसा अलै० की लाठी को सांप बना दिया और सांप को फिर लाठी बना दिया। कि नज़र तो वह लाठी आ रही थी, फिर न

वह लाठी थी और न ही सांप। कि असल के एतबार से न वह लाठी थी न वह सांप। इसलिए न लाठी सांप बन सकती है और न सांप लाठी बन सकता है, पर ऐसा हुआ। तो इससे पता चलता है, कि चाहे लाठी हो या सांप या कोई नज़र आने वाली या न नज़र आने वाली मख़्लूक़। वह मख़्लूक़ चाहे।

चींटी की हो या जिब्रील की,
ज़मीन की हो या आसमान की,
ज़र्रे की हो या पहाड़ की,
क़तरे की हो या समुंद्र की,

यानी अर्श से लेकर फ़र्श (ज़मीन) के बीच की कोई भी मख़्लूक़ हो, उन सब की हैसियत एक कठपुतली से ज़्यादा नहीं है। उन सबके लिए अल्लाह का जो अम्र काम कर रहा है, वह असल चीज़ है। अल्लाह तआला उन शक्लों से जब चाहेंगे, जहां चाहेंगे, जैसे चाहेंगे, जो चाहेंगे वह होगा।

जैसे मां के पेट में नुत्फ़ा का जमा हुआ ख़ून, जमे हुए ख़ून के गोश्त का लोथड़ा और इस गोश्त के लोथड़े पर जिस्म के हिस्से का बनना कि आधा इंच के गोश्त के लोथड़े के अंदर हड्डियों का ढांचा बनाकर दिल, गुर्दा, तिल्ली, फेफड़ा वग़ैरह बनाकर नसों का जाल बिछा देते हैं। फिर गोश्त के लोथड़े के ऊपर आंख, नाक, कान, मुंह, हाथ, पैर वग़ैरह अपनी क़ुदरत से बनाते हैं। इंसानों के जिस्म बनाने की यह तर्तीब, अल्लाह तआला ने मुक़र्रर की है। हां तीन इंसान इस तर्तीब से बाहर है–

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम,
हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम,
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम।

जिस्म से ख़ून का आना जाना

हम सब अपने–अपने बारे में भी जान लें कि हम सबका जिस्म अल्लाह तआला ने उसी तर्तीब से बनाया है, जिस जिस्म को हम अपनी मिल्कियत (अपनी चीज़) समझकर अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल कर रहे हैं। हालांकि अल्लाह तआला ने यह जिस्म अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल होने के लिए दिया था। तो जब इस अंदाज़ में

अल्लाह तआला इंसान का जिस्म बना देते हैं, तो जिस्म को सबसे पहले खून की ज़रूरत पड़ती है। अल्लाह तआला ने गैबी ख़ज़ाने से इस जिस्म में सीधे खून भेजते हैं, पर इंसानों को आसमानों के ऊपर से खून का आना नज़र नहीं आता। जिस तरह बुख़ार का इंसान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नहीं आता। कि हज़रत सलमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन बुख़ार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर के अंदर आने की इजाज़त चाही। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे पूछा, तुम कौन हो?

उसने कहा कि मैं बुख़ार हूं, मैं गोश्त को काटता हूं और खून चूसता हूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया: तुम "कुबा" (अरब की एक बस्ती का नाम) वालों के पास चले जाओ! चुनांचे बुख़ार कुबा वालों के पास चला गया और उन सबका इतना खून चूसा और गोश्त काटा कि उनके चेहरे पीले हो गए। तो उन्होंने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बुख़ार की शिकायत की।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों से फ़रमाया: कि तुम लोग क्या चाहते हो, अगर तुम चाहो, तो मैं अल्लाह तआला से दुआ कर दूं, तो अल्लाह तआला बुख़ार को वापस बुला लें और अगर तुम लोग चाहो, तो बुख़ार को रहने दो, जिससे तुम लोगों के सारे गुनाह माफ़ हो जाएं।

कुबा वालो ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप बुख़ार को रहने दें। (बिदाया 6, 160)

इस रिवायत से यह पता चलता है कि जिस तरह बुख़ार का इंसान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नहीं आता, उसी तरह अल्लाह तआला अपने गैबी ख़ज़ाने से जब जिस्म में खून भेजते हैं, तो उस खून का आना भी किसी को नज़र नहीं आता। इस ज़माने में यह बात मोबाइल और कम्प्यूटर से समझी जा सकती है, कि आप जब मोबाइल पर मैसेज (*Message*) का आना या रिचार्ज (*Recharge coupon*) कराने पर पैसा का आना किसी को नज़र नहीं आता। उसी तरह कम्प्यूटर पर किसी किताब और चीज़ का डाउनलौड (*Download*) करना किसी को नज़र नहीं आता। इस बात को खुद अल्लाह तआला ने परिंदों के अन्दर से अंडों को

निकालकर समझाया है कि—

﴿وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾

"तू ही बे—जान से जानदार पैदा करे और तू ही जानदार से बेजान पैदा करे, तो ही जिसे चाहे बे—शुमार रोज़ी दे।"

(सूरः आले इम्रान आयत न० 27)

इमाम अहमद बिन हंबल रह० फ़रमाते थे कि हमने तो अपने रब को मुर्गी के अंडे से पहचाना है, कि रब अल्लाह है।

मेरे दोस्तो! हमें यह धोखा लगा है, कि हम—

पैसे से पलते हैं।

दुकान से पलते हैं।

मेहनत से पलते हैं।

खेती से पलते हैं।

नौकरी से पलते हैं।

इससे बड़ी दुनिया में कोई झूठ नहीं कि हम चीज़ों से पलते हैं या अपनी मेहनत से पलते हैं। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि जो इंसान, इनमें से किसी भी चीज़ से पलने का यक़ीन लेकर मरेगा, तो ख़ुदा की क़सम! वह क़ब्र के किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पाएगा।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें?)

इसलिए हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० हमेशा यह बात एलानिया कहा करते थे, कि अगर ज़मीन तांबे की हो जाए और आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इंसान भी न हो, तब भी मुझे यह ख़्याल न आएगा कि मेरे खाने—पीने का क्या होगा।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि अगर ज़मीन तांबे की हो जाए और आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इंसान भी न हो, फिर अगर किसी इंसान के दिल में यह ख़्याल आ जाए कि मेरे खाने—पीने का क्या होगा?

तो यह ख़्याल......इसके अंदर के शिर्क की वजह से आया है, इसके अंदर ईमान नहीं है।

मेरे दोस्तो! हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः कि ईमान सिर्फ़ ईमानी शक्ल बना लेने से नहीं मिलता। (कंज़ुल उम्माल, 8, 210)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमायाः कोई बंदा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक वह ईमान की चोटी तक नहीं पहुंच जाए और ईमान की चोटी पर उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक उसके नज़दीक फ़क़ीरी, मालदारी से और छोटा बनना, बड़े बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और उसकी तारीफ़ करने वाला उसकी बुराई करने वाला दोनों बराबर न हो जाएं। (हुलिया, 1, 132)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः ऐ लोगो! अपने बातिन की इस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर ख़ुद ठीक हो जाएगा। तुम अपनी आख़िरत के लिए अमल करो, तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुद ब ख़ुद हो जाएंगे। (बिदाया, 7, 56)

बग़ैर कमाए कैसे पलेंगे?

एक साथी ने एक साथी के चार महीने की तश्कील की, कि ईमान को सीखने के लिए, आप भी अल्लाह के रास्ते में चलो! उसने कहा, कि मुझे भी इसका यक़ीन है कि अल्लाह पालते हैं, पर अगर मैं चार महीने के लिए जमाअत में चला गया, तो मेरे बूढ़े मां-बाप और मेरे बीवी-बच्चों का क्या होगा? अकेला मैं ही कमाने वाला हूं, और अगर मैं कमाकर नहीं लाऊंगा, तो ख़ुद क्या खाऊंगा और अपनी बीवी बच्चो और मां-बाप को क्या खिलाऊंगा? कि बेशक पालने वाला तो अल्लाह ही है पर बग़ैर कमाए हम लोग कैसे पलेंगे?!!!

उस साथी ने कहा कि भाई! यही चीज़ तो सीखने के लिए निकलना है कि आप दुकान से नहीं पल रहे हो, बल्कि आपको और आपके घरवालों को अल्लाह तआला सीधे अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। हां, चूंकि इंसान को दुनिया में इम्तिहान के लिए भेजा गया है, इसलिए उसे चीज़ों से पलना नज़र आ रहा है, पर सारी मख़्लूक़ को अल्लाह तआला सीधे अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। लेकिन वह इस बात को मानने पर राज़ी नहीं हुआ, कि अल्लाह अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं और उसके एतबार से उसकी बात भी ठीक है। क्योंकि 20 साल से वह कमा कर ही

पल रहा है। यही हाल सबका है, कि बेशक पालने वाले तो अल्लाह ही हैं, पर बग़ैर कमाए हम लोग कैसे पलेंगे? चूंकि कमा रहे हैं, तभी पल रहे हैं। तो उस साथी की तश्कील करने वाले ने कहा, कि जो तुम कह रहे हो, यह तुम्हारा ग़लत यक़ीन है और यह बात बिल्कुल झूठी बात है, कि कोई किसी सबब से पलता है, बल्कि हर एक को अल्लाह तआला अपनी कुदरत से पाल रहे हैं। अब रही यह बात कि कैसे पाल रहे हैं? तो मेरी बात सुनो! मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम दुकान से नहीं पल रहे हो, बल्कि अल्लाह पाल रहे हैं।

देखो! मिसाल के तौर पर जब तुम दुकान जा रहे होगे, कि उस रास्ते में कार से हादसा (*accident*) हो जाए, लोग तुम्हें उठाकर वहां क़रीब के नरसिंग होम में ले जाएंगे, पर वहां के डाक्टर तुम्हारी हालत को देखकर तुम्हें मैडिकल कालेज भेज देंगे, मैडिकल कालेज पहुंचने पर वहां के डाक्टर तुम्हारी हालत देखकर तुम्हारे घरवालों से कहेंगे, कि इनके हाथ–पैर नीले पड़ गए हैं और इनके सारे जिस्म में ज़हर फैल रहा है। लिहाज़ा इनके दोनों हाथ और इनके दोनों पैर आप्रेशन करके काटने पड़ेंगे, तभी उनकी जान बचा पाएंगे। तो अब बताओ तुम्हारे घरवाले डाक्टर को क्या जवाब देंगे?

क्या यह जवाब देंगे, कि इनके हाथ, पैर न काटिए, हम लोग इनको इसी हालत में वापस ले जा रहे हैं?!!

तो इसने जवाब दिया, कि नहीं, बल्कि मेरे घरवाले कहेंगे, कि डाक्टर साहब इनका आप्रेशन कर दीजिए।

तश्कील करने वाले ने कहा, फिर आप्रेशन हो जाने के बाद जब आप्रेशन थिएटर से तुम्हें बाहर लाया गया, तो तुम्हारा पांच फिट का जिस्म अब ढाई फिट बचा अब फिर 3 महीने तक तुम्हें अस्पताल में रहना पड़ा, जब तुम्हारे ज़ख़्म वग़ैरह सूख गए तो तुम्हारे घरवाले तुम्हें अस्पताल से घर वापस ले आए, तो घर आने पर न अब तुम दुकान के क़ाबिल रहे और न दुकान तुम्हारे क़ाबिल रही। चूंकि तुम दुकान से पल रहे थे, और अपनी मेहनत से पल रहे थे, तो दो–चार दिन के बाद ही तुम्हारी मौत हो जाएगी, क्योंकि अब दुकान पर कमाने जा नहीं पाओगे और तुम्हारी मौत के दो चार दिन के बाद तुम्हारे घरवाले भी मर जाएंगे, क्योंकि इन

सबको तुम पालते थे !!!

यह सुनकर वह बोला, नहीं मैं मरूंगा नहीं।

तश्कील करने वाले ने पूछा, क्यों नहीं मरोगे? क्योंकि तुम दुकान से पलते थे।

उसने कहा, अल्लाह कोई दूसरा रास्ता खोल देंगे।

तश्कील करने वाले ने कहा, इसका मतलब यह हुआ कि तुम दुकान से नहीं पल रहे थे? तुम तो यह कह रहे थे, कि पालने वाले तो अल्लाह हैं, पर अगर मैं दुकान नहीं जाऊंगा तो कैसे पलूंगा? इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हारे अंदर दुकान से पलने का जो यक़ीन था, वह ग़लत था? अच्छा अब बताओ, अल्लाह तआला तुम्हें कैसे पालेंगे?

इसने तश्कील करने वाले के इस सवाल का जब कोई जवाब न दिया। तो तश्कील करने वाले ने इससे कहा, कि मैं बताऊं तुम कैसे पलोगे?!

इसने कहा, हां, बताओ।

तश्कील करने वाले ने कहा, कि अब तुम्हारे ससूर दुबई से हर महीने 5000 हज़ार रूपये भेजेंगे, कि अब तुम तो अपाहिज हो गए। तो अपनी बेटी और नवासे की मुहब्बत में वह पैसे भेजेंगे। अब जब वहां से पैसा आएगा तो तुम्हारे अंदर ससूर से पलने का यक़ीन बनेगा और दुकान से पलने का यक़ीन निकलेगा। पर अब तुम यह कहोगे, कि पालने वाले तो अल्लाह हैं, मगर ससूर के बग़ैर कैसे पलेंगे? जबकि 20 साल से तुम अपने अंदर दुकान से पलने के यक़ीन के साथ ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। अगर उसी हाल पर तुम्हारी मौत आ जाती तो अल्लाह की रबूबियत में दुकान को शरीक करके मरते कि जिस तरह पहले तुम दुकान से नहीं पल रहे थे जो बात खुद आज तुम्हारे सामने है। इसी तरह यह बात भी सच्ची है, कि तुम ससूर से नहीं पलोगे, बल्कि अल्लाह पालेंगे। चूंकि इंसान का, हर पल इस दुनिया में इम्तिहान लिया जा रह है। इसलिए दुनिया में इंसान को चीज़ों से, सामान से, माल से और लोगों से अपना पलना नज़र आएगा। पर खुदा की क़सम! सच्ची बात यह है कि हर एक को अल्लाह तआला अपनी कुदरत से पाल रहे हैं। अब ससूर के पैसे से पलोगे, तो दुकान से पलने का यक़ीन निकलकर ससूर से पलने का यक़ीन पैदा

होगा।

तश्कील करने वाले ने उससे फिर पूछा! कि अच्छा अब यह बताओ अगर तुम्हारे ससूर का अब दुबई में इंतिक़ाल हो जाए और वहां से पैसा आना बंद हो जाए, फिर तुम लोग कैसे पलोगे?

इस बार उसने जवाब दिया, कि अल्लाह तआला और किसी रास्ते से पालेंगे।

तश्कील करने वाले ने फिर उससे सवाल किया कि अच्छा यह बताओ अगर ज़मीन तांबे की हो जाए आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इंसान भी न हो, ज़मीन में सिर्फ़ तुम तुम्हारे बीवी–बच्चे और तुम्हारे मां–बाप यानी कुल पांच (5) लोग रह जाओ तुम सबकी मौत हो जाएगी?!! इसलिए कि–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इंसान के दिल में एक ख़्याल फ़रिश्ता डालता है और एक ख़्याल शैतान डालता है। शैतान की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह होता है, कि वह अल्लाह के ग़ैर से होने को और अल्लाह के करने से जो सब कुछ हो रहा है, इसके झुठलाने पर उभारता है। फ़रिश्ते की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह है, कि वह अल्लाह का कहना मान लेने और अल्लाह ही करेंगे की तस्दीक़ पर उभारता है। लिहाज़ा जो शख़्स अपने अंदर फ़रिश्ते का ख़्याल पाए, तो उसे अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए इस ख़्याल पर जमना चाहिए और अगर अपने अंदर शैतान का लाया हुआ ख़्याल पाए, तो इसको शैतान से अल्लाह की पनाह मांगना चाहिए। (तिर्मिज़ी)

मुर्ग़ी के अंडे से रब की पहचान

इसलिए इस वक़्त शैतान तुम्हारे दिल में यह ख़्याल डाले, तो मुर्गी के अंडे को सोचकर अपने आपको समझाना, कि अल्लाह तआला किस तरह उस छिलके के अंदर बच्चे को बनाते और उसकी परवरिश करते, कि मुर्ग़ी का अंडा चारों तरफ़ से बंद होता है और छिलके के नीचे एक वाटर परूफ़ झल्ली होती है जो छिलका फोड़ने पर हमें नज़र आती है। मुर्ग़ी का अंडा उसे पानी में उबालकर या फिर उसे फोड़कर, फेटकर जिसका आमलेट बनाया जाता है, कि उसे उबालकर, या आमलेट बनाकर खाने में न तो मुर्ग़ी के रंग बिरंगे पर हमें नज़र आते हैं, और न ही आंख, पैर, ख़ून

वग़ैरह ही नज़र आते हैं। लेकिन अल्लाह अपनी कुदरत से इस छिलके के अंदर मुर्ग़ी की शक्ल बनाते हैं और शक्ल बनाकर फिर इसके अंदर वहां रिज़्क़ और रूह पहुंचाते हैं। तो जब यह मुर्ग़ी का बच्चा अल्लाह से मिली ताक़त का इस्तेमाल करके छिलके को फोड़कर बाहर आता है, अगर उसी वक़्त उस बच्चे को चाक़ू से ज़िब्ह करके देखा जाए तो उसके जिस्म के अंदर से ख़ून टपकता हुआ नज़र आएगा।

यह बात यहां पर इस वजह से लिख रहा हूं क्योंकि आज सारी दुनिया में इस बात को बोला जा रहा है कि फल और मेवों से, ग़ल्लों और सब्ज़ियों के खाने-पीने से जिस्म के अंदर ख़ून बढ़ता और बनता है और इससे भी दो क़दम आगे यह बात चल रही है कि इंजेक्शन, टेबलट, सिरप या टॉनिक और हकीम के माजून, या वैद की पंखी और जड़ी बूटियों और भसम से भी, इंसान के जिस्म के अंदर ख़ून, बनता भी है और बढ़ता भी है। तो भला अंडे से निकलने वाले मुर्ग़ी के बच्चे के अंदर यह ख़ून कहां से आ गया?!! जबकि छिलका तो चारों तरफ़ से बंद था फिर यह खाने पीने की चीज़ें भला उसके अंदर कैसे पहुंच गई? ये लोग जवाब देते हैं, कि अंडे के अंदर अल्लाह पाक अपनी कुदरत से ख़ून बनाते और बढ़ाते है। लेकिन इंसान के जिस्म में इन खाने-पीने की चीज़ों से ख़ून बनता और बढ़ता है और अल्लाह अपनी कुदरत से और ख़ून बनाते और बढ़ाते हैं।

मेरे दोस्तो! यह बोल ज़बान से निकालना यह तो दूर की बात है, बल्कि ऐसा सोचना भी शिर्क है, कि अल्लाह पाक की कुदरत में हमने शरीक बनाया हुआ है। ईमान को न सीखने की वजह से इस तरह के बोल, आज दुनिया में बोले जा रहे हैं। इसी बे-बुनियाद बोलों की वजह से उम्मत का कमाया हुआ माल उन चीज़ों के खरीदने पर खर्च हो रहा है। जबकि गोश्त और ख़ून से ताल्लुक़ रखने वाली हदीसे कुदसी पर भी ज़रा ग़ौर कर लिया जाए, जिसमें अल्लाह पाक का यह इर्शाद है कि:

जब मैं अपने मोमिन बंदे को किसी बीमारी में मुब्तला करता हूं, फिर यह अपनी इयादत (जो इससे बीमारी की हालत में मिलने आते हैं) करने वालों से मेरी शिकायत नहीं करता, तो मैं इसे अपनी क़ैद से आज़ाद कर देता हूं, यानी इसके गुनाहों को माफ़ कर देता हूं, फिर इसे इसके गोश्त से बेहतर गोश्त देता हूं और इसे इसके ख़ून से बेहतर ख़ून देता हूं।

नाफ़ के गंदे खून से परवरिश

इसी तरह मेरे दोस्तो! आज दुनिया में यह बोला जा रहा है, कि मां के पेट के अंदर रह रहे बच्चे की परवरिश अल्लाह पाक नाफ़ के गंदे खून से करते हैं। अब यहां ज़रा इस बात पर भी गौर कर लिया जाए कि इंसान, जो सारी मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा अशरफ़ और फ़रिश्तों से भी जिस इंसान को सज्दा कराया जा चुका हो, तो उस इंसान की परवरिश नाफ़ के गंदे ख़ून से की जाए और जिस मुर्ग़ी को हमें पकाकर खाने की इजाज़त है उस मुर्ग़ी के बच्चे को अंडे के छिलके में बग़ैर नाफ़ के परवरिश की जाए। कि इंसान को नाऊज़ुबिल्लाह मां के पेट में गंदे ख़ून से रोज़ी पहुंचाई जाए और मुर्ग़ी के बच्चे को अंडों के छिलकों के अंदर बग़ैर नाफ़ के सीधे अल्लाह से आने वाली रोज़ी हासिल हो। तो इस तरह रोज़ी के हासिल करने में मुर्ग़ी का बच्चा इंसान के बच्चे से ज़्यादा अफ़ज़ल हो गया। असल बात यह है कि जब मां के पेट में जब 4 महीने में बच्चे का जिस्म बन जाता है, तो अल्लाह तआला आलमे अरवा से उस जिस्म में रूह भेजते हैं। जिस्म के अंदर रूह आने के बाद जिस्म को गिज़ा की ज़रूरत पड़ती है। देखो! जब किसी के जिस्म से रूह निकल जाती है, तो उस जिस्म को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ती है। लेकिन जब जिस्म में रूह होती है, तो जिस्म को गिज़ा की ज़रूरत पड़ती है मां के पेट में अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से बच्चे को गिज़ा पहुंचाते हैं, जिस्म को गिज़ा मिल जाने के बाद उसे पेशाब–पाख़ाने की जगह से पेशाब–पाख़ाना करता है। यहां पर यह बात बिल्कुल साफ़ हो गई कि बच्चे को मां के पेट में गिज़ा पहुंचाई जाती है। वरना इंसान अगर कुछ खाएगा पिएगा नहीं, तो उसे पेशाब–पाख़ाना नहीं होगा।

मेरे दोस्तो! रोज़ी का ताल्लुक़ सीधे अल्लाह की ज़ात से है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि बंदे के और उसकी रोज़ी के बीच एक पर्दा पड़ा हुआ है। अगर बंदा सब्र से काम लेता है, तो उसकी रोज़ी ख़ुद उसके पास आ जाती है और अगर वह बिना सोचे–समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है, तो वह इस पर्दे को फाड़ लेता है लेकिन अपने मुक़द्दर से ज़्यादा नहीं पाता है। (कंज़ुल उम्माल)

अल्लाह ने इस दुनिया में, इंसान की रोज़ी का हासिल होना कि इंसान के गुमान पर रखा है। ख़ुद अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: कि

"मेरा बंदा मुझसे जैसा गुमान करेगा मैं उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा" अब अगर इंसान के अंदर माल से होने का गुमान है, तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीज़ों और आसमानों से काम होने का गुमान है तो उस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़्सान यह है कि आदमी के अंदर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा, वह उसी चीज़ का मुहताज होगा।

शेर का कान मरोड़ दिया

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० एक मर्तबा कहीं जा रहे थे, रास्ते में उन्हें एक जगह पर कुछ लोग खड़े हुए मिले, उन्होंने उन लोगों से पूछा कि तुम लोग रास्ते में क्यों खड़े हो? लोगों ने बताया कि आगे रास्ते में एक शेर खड़ा है, जिसके डर की वजह से हम लोग यहां रुके हुए हैं, यह सुनकर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० अपनी सवारी से नीचे उतरे और चलकर शेर के पास पहुंचे और उसके कान को पकड़कर मरोड़ा फिर उसकी गर्दन पर एक थप्पड़ मारकर उसे वहां से भगा दिया, फिर वापस आते हुए अपने आपसे फ़रमायाः ऐ इब्ने उमर!

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सच कहा था, कि इब्ने उमर आदम पर वहीं चीज़ मुसल्लत होती है इब्ने आदम जिस चीज़ से डरता है। अगर इब्ने आदम अगर अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ से न डरें, तो अल्लाह तआला उस पर और कोई चीज़ मुसल्लत न होने दें। इब्ने आदम इसी चीज़ के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़्सान होने का यक़ीन होता है। अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ से नफ़ा या नुक़्सान का यक़ीन न रखे, तो अल्लाह तआला उसे किसी और चीज़ के हवाले न करे।" (कुंज़ुल उम्माल 7, 59)

इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के अंदर सिर्फ़ अल्लाह ही से होने का गुमान पैदा कराया था, जिसकी वजह से सहाबा रज़ि० के अंदर अल्लाह की मुहताजगी थी, कि हर वक़्त हर आन हर लम्हा वे अपने आपको अल्लाह का मुहताज समझते थे और जब किसी के साथ कोई मामला हो जाता था, तो वह अल्लाह ही से कहता था। अपनी हर ज़रूरत को वे लोग अल्लाह ही के सामने पेश करते थे। वे अपनी रोज़ियां उस रास्ते से हासिल करते थे, जिस रास्ते को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें बतालाया था।

आज तो हम सिर्फ़ खाने पीने को ही रोज़ी समझते हैं। किसी से अगर पूछो कि रोज़ी किसे कहते हैं? तो वे इन्हीं चीज़ों को गिना देगा। हालांकि इंसान के जिस्म की हर ज़रूरत को रोज़ी कहते हैं। देखो! जिस्म के ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह हैं, इस वक़्त दुनिया में रह रहे हम 7 अरब इंसानों में से 200 साल पहले किसी का भी जिस्म इस दुनिया में नहीं था। इस जिस्म को अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से इस दुनिया में इम्तिहान लेने के लिए बनाया है। कैसे बनाया? इसकी ख़बर क़ुरआन व हदीस के ज़रिए हमें दे दी गई है। कि मां के पेट में बग़ैर किसी ज़रिए के हमारी जिस्म की ज़रूरतों को पूरा किया। बच्चे दानी के अंदर खून, फिर हवा और खाने पीने का इंतिज़ाम किया, कि जैसे ही मां के पेट से बाहर आए, जिस्म में ताक़त, आंखों को रोशनी, मुंह को बोल, कानों को आवाज़, दिमाग़ को सोचने की क़ुव्वत इन तमाम ज़रूरतों को पूरा किया, और आज भी इन तमाम ज़रूरतों को अल्लाह ही पूरा कर रहे हैं। अगर इन तमाम ज़रूरतों को पैसे देकर लेते, कि

एक पैसा सैकण्ड लेकर आंखों की रोशनी देते,
एक पैसा सैकण्ड लेकर ज़बान के बोल देते,
एक पैसा सैकण्ड लेकर कानों में आवाज़ देते,

जैसे मोबाइल पर एक पैसा सैकण्ड हमारे बोलने और सुनने का लेते हैं। अगर अल्लाह भी अपने बंदों से उसका चार्ज लेते, तो इंसान क्या करता?! आंखों की रोशनी, ज़बान के बोल, कानों की आवाज़, जिस्म में ताक़त वग़ैरह, ये वे चीज़ें हैं, जिसे इंसान कुछ भी क़ीमत देकर हासिल करना चाहेगा, पर अल्लाह तआला हैं, उन्होंने सारी मख़्लूक़ की रोज़ी का ज़िम्मा ख़ुद ले रखा है इसलिए हर एक की रोज़ी वह ख़ुद पहुंचा रहे हैं। हम ज़रा इस बात पर ग़ौर करें कि हमारे जिस्म की वे ज़रूरतें कि आंखों की रोशनी, ज़बान के बोल, कानों की आवाज़, जिस्म में ताक़त फिर जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं दे सकता। वह बग़ैर पैसे और बग़ैर हमारी किसी मेहनत के हमें मिल रही है, तो रोटी, दाल, या बोटी या कपड़े वग़ैरह क्या हैं हमें पैसे से या हमारी मेहनत से हासिल हो रही है?!!

नहीं मेरे दोस्तो! ये चीज़ें भी अल्लाह हमें दे रहे हैं, पर दिख रहा है, चीज़ों से मिलते हुए। क्योंकि यही इंसान का इम्तिहान है कि अल्लाह ने इस दुनिया के

अन्दर रोज़ी का दारोमदार इंसान के गुमान पर रखा है। अगर इंसान के अंदर माल से होने का गुमान है, तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीज़ों और सामान से काम होने का गुमान है, तो इस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़्सान यह है, कि आदमी के अंदर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा वह उसी चीज़ से मुहताज होगा।

सहाबा वाली बात और सहाबा वाला गुमान हम मुसलमानों के अंदर पैदा हो जाए, इसके लिए हम मुसलमानों को सबसे पहले ईमान सीखना पड़ेगा। इसलिए कि अल्लाह ने क़ियामत तक आने वाले इंसानों के लिए सहाबा वाला ईमान और सहाबा वाले आमाल को नमूना बनाया है।

मेरे दोस्तो! आज ईमान को न सीखने की वजह से, इंसान इम्तिहान की चीज़ों से इत्मिनान हासिल करना चाहता है। जबकि इत्मिनान का हासिल होना, अल्लाह तआला ने जिस्म के सही इस्तेमाल पर रखा है। हमारे जिस्म के हिस्से अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर, उनके हुक्मों पर इस्तेमाल होने लगें, कि आंख, कान, ज़बान, दिमाग़, हाथ–पैर, शर्मगाह हराम से बच जाए। इसके लिए मस्जिदों में ईमान के हल्के लगाकर, ईमान को सीखना और इतना ईमान सीखना है, कि हमारे जिस्म के हिस्से हराम से बच जाए। वरना आज मुसलमान हलाल कमाने के बावजूद और हलाल खाने के बावजूद और हलाल पहनने के बावजूद।

हराम बोल रहा है।
हराम देख रहा है।
हराम सुन रहा है, और
हराम सोच रहा है।

ईमान को न सीखने की वजह से आज मुसलमान अपने ईमान से बे–परवाह है अगर उसे अपने ईमान की परवाह होती तो यह हराम से बच रहा होता।

ईमान का नूर दिल से निकल कर सर पर

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है "कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब किसी मोमिन से कबीरा गुनाह हो जाता है तो ईमान का नूर उसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है, जब तक वह तौबा नहीं करता,

वह नूर उसके जिस्म से वापस नहीं आता, सोचो ज़रा! हमें अपने ईमान की कितनी फ़िक्र है?!! कि क्या हमने कभी उलमा किराम से यह जानने की ज़रूरत महसूस की है कि गुनाहे कबीरा क्या–क्या है? और उनकी तायदाद कितनी है? मेरे दोस्तो! ईमान को न सीखने की वजह से आज उम्मत ने इल्म को ईमान समझ लिया है और नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात को इस्लाम समझ लिया है। हालांकि ये इस्लाम की बुनियाद हैं इस्लाम नहीं है। दावत की इस मुबारक मेहनत से यही बात चाही जा रही है, कि मुसलमान अपने ईमान को लेकर फ़िक्रमंद हो जाए। इसी के लिए हज़रत मौलाना सअ़द साहब अपनी–अपनी मस्जिदों में ईमान के हल्के क़ायम करने के लिए बार–बार कह रहे हैं।

अब ईमान के सीखने में सबसे पहले अल्लाह की ज़ात का यक़ीन अपने दिल में पैदा करना है वह अल्लाह जिसके नाम के बोल से यह सारी क़ायनात क़ायम है। हदीस में आता है, कि जब तक इस दुनिया में अल्लाह का नाम का बोल ज़बान से बोलने वाला रहेगा, उस वक़्त यह दुनिया इसी तरह क़ायम रहेगी और जिस दिन किसी के मुंह से लफ़्ज़ "अल्लाह" नहीं निकलेगा उस वक़्त चाहे ज़मीन पर 10 अरब इंसान आबाद हों।

उनमें से 1 अरब इंसान, उस वक़्त इंजिनियर हो।
1 अरब इंसान डाक्टर हो।
1 अरब इंसान प्रोफ़ेसर हो।
1 अरब इंसान साइंटिस हो।
हर इंसान, अरबपती हो।
हर इंसान के पास दस–दस किलों सोना हो।

गरज यह है कि इस दुनिया में इतना सब कुछ होने के बावजूद, जिस दिन इस ज़मीन किसी एक इंसान के भी मुंह से अगर लफ़्ज़ अल्लाह नहीं निकलेगा, तो उसी दिन यह आसमान फट जाएगा, ज़मीन रेज़ा–रेज़ा हो जाएगी, सब कुछ खत्म कर दिया जाएगा। अब बैठकर सोचो! इस दुनिया के बारे में, जिसको पाने के लिए हम क्या कुछ नहीं कर रहे हैं, जबकि हर इंसान के लिए यह दुनिया मुक़द्दर हो चुकी है, इंसान अपने मुक़द्दर से लड़ाई लड़कर क्या हासिल कर लेगा?!!

जो दुनिया अल्लाह के नाम के बोल की वजह से क़ायम है, जी हां! सिर्फ़ मुंह

से निकले हुए बोल, कि आपने अमेरिका में रहने वाले अपने भाई को फोन किया, उसने आपके फोन को रिसिव (*Recieve*) किया तो आप से यहां बोले 'हेलो (*Hello*)' तो आपके मुंह से निकले हुए बोल 'हेलो (*Hello*)' यहां से 13554 किलोमीटर दूर एक सैकण्ड में हवा में होते हुए हिन्दुस्तान से अमेरिका पहुंच गया, अगर मुंह निकले हुए इन बोलो को कोई आदमी पकड़ना चाहे तो टेप रिकार्डर में कैसिट लगाकर पकड़ सकता है, या मोबाइल (*Mobile*) से टेप करके पकड़ सकता है।

लफ्ज़ "अल्लाह" की ताक़त

मेरे दोस्तो! ईमान को न सीखने की वजह से हमें लफ्ज़ "अल्लाह" की ताक़त का अंदाज़ा नहीं है। एक चोर से लफ्ज़ "पुलीस" की ताक़त के बारे में पूछो, कि कोई चोर के सामने "पुलीस" कह दे तो उसका क्या हाल होता है, कि उसका जिस्म कांप उठता है। ज़रा सोचो! कि जिस अल्लाह के बोल पर सारी कायनात क़ायम है। और उस अल्लाह का यक़ीन कोई अपने दिल में पैदा कर ले तो आप खुद यह बतलाओ कि यह तमाम क़ायनात क्या उसके पीछे-पीछे नहीं चलेगी?! देखो! चोर के दिल में पुलीस की ज़ात उसकी ताक़त का यक़ीन होता है, इसी तरह मुसलमान के अंदर अल्लाह का यक़ीन और उसकी ताक़त का यक़ीन अल्लाह की ज़ात का यक़ीन होना चाहिए, जिसको हम मुसलमानों ने अपने अंदर पैदा नहीं किया, अगर पैदा किया होता, अल्लाह का नाम सुनकर हमारा भी जिस्म कांप उठता, अल्लाह का नाम सुन हमारा दिल न डरे, तो यह तो हमारे लिए रोने वाली बात है कि ईमान हो और दिल न डरे ऐसा कैसे हो सकता है। हां! यह कुरआन की बात है अल्लाह तआला ने कुरआन में ईमान की निशानी बयान फ़रमाई,

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ﴾

"कि ईमान वाले तो वही है कि जब उनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह तआला की ख़बर उनको सुनाई जाती है, तो उन ख़बरों को सुनकर उनके यक़ीन बढ़ जाते हैं, और वे लोग सिर्फ़ अपने रब पर ही तवक्कुल करते हैं। (सूरः अंफ़ाल)

अब अगर किसी शख़्स ने अपने दिल के अंदर अल्लाह की ज़ात का, सिफ़ाते ख़ूबियत के साथ यक़ीन पैदा कर लिया। तो जैसे ही उस शख़्स की ज़बान से कोई बोल निकलेंगे, वह बोल, सीधे आसमानों को पार करते हुए अर्श पर पहुंच जाएंगे। फिर सीधे अल्लाह अपनी कुदरत से उसका काम बनाएंगे, जिस तरह आज मोबाइल के सामने बोलकर काम बनाए जा रहे हैं, सहाबा रज़ि० ने इनसे बड़े–बड़े काम अल्लाह से आसमानों के ऊपर से करवाएं हैं।

एक मर्तबा अबू रिहाना रज़ि० नौव पर जा रहे थे, उस पर बैठे हुए वह सूई से अपनी कापी सी रहे थे, अचानक हवा के झोंके से उनके हाथ से सूई छूटकर समुंद्र में गिर गई, उन्होंने आसमान की तरफ़ देखकर दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे तेरी क़सम मुझे मेरी सूई वापस कर दे! इतना कहकर उन्होंने पानी में देखा तो उनकी सूई पानी के ऊपर पड़ी हुई थी, उन्होंने अपनी सूई उठाई और कापी सिलने लगे। (इसाबा, 2, 157)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी बांदी ज़नोरा रज़ि० को आज़ाद किया तो उनकी आंखों की रोशनी चली गई, इस पर कुरैश के सरदार ने कहा: तुम्हें लात व उज़्ज़ा (अरब के दो बुतों का नाम जिसे काफ़िर पूजते थे) ने अंधा कर दिया, यह सुनकर हज़रत ज़नोरा ने कहा: कि तुम लोग ग़लत कहते हो, बैतुल्लाह की क़सम! लात व उज़्ज़ा किसी के काम नहीं आ सकते, न ही ये किसी को नफ़ा पहुंचा सकते हैं और ना ही किसी को नुक़सान पहुंचा सकते हैं, इतना कहना था, कि अल्लाह ने उनकी आंखों की रोशनी वापस कर दी। (इसाबा, 4, 314)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ि० ने हम लोगों से कहा कि चलो हम लोग अपनी क़ौम की ज़मीन पर चलते हैं, चुनांचे हम लोग चल पड़े मैं और उबई बिन क़ाब रज़ि० जमाअत से कुछ पीछे रह गए थे इतने में एक बादल तेज़ी से आया और बरसने लगा तो उबई बिन क़ाब रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह! इस बारिश की तक्लीफ़ को हमसे दूर कर दे। चुनांचे हम बारिश में चलते रहे लेकिन हमारी कोई चीज़ बारिश से न भीगी। जब हम दोनों हज़रत उमर रज़ि० और उनके साथियों के पास पहुंचे तो उन लोगों के जानवर, कजावे और सारा सामान भीगा हुआ था। हम लोगों को भीगा न देखकर हज़रत उमर

रज़ि० ने हमसे पूछा कि क्या तुम लोग किसी दूसरे रास्ते से आए हो? जिसकी वजह से बारिश से नहीं भीगे। मैंने उन्हें बताया कि हज़रत उबई बिन काब रज़ि० ने यह दुआ कर दी थी कि ऐ अल्लाह! हमसे इस बारिश की तक्लीफ़ को दूर कर दे। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि तुम लोगों ने अपने साथ हमारे लिए भी दुआ क्यों नहीं की?। (मुंतख़ब अल–कंज़, 4, 132)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के पास से एक आदमी मश्क लेकर गुज़रा, उन्होंने उससे पूछा, इस मश्क में क्या है? उसने कहा, शहद है। हज़रत ख़ालिद ने दुआ कि ऐ अल्लाह! इसे सिरका बना दे, जब वह आदमी अपने साथ वालों के पास पहुंचा तो उन लोगों से कहा कि आज मैं जो शराब लाया हूं वैसी शराब अरब वालों ने कभी पी न होगी, यह कहकर उसने मश्क का मुंह खोलकर शराब उंडेली, तो शराब की जगह उसमें सिरका निकलता देखकर उसने कहा, अल्लाह की क़सम ख़ालिद की दुआ लग गई। (बिदाया, 7, 114)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को यह ख़बर मिली कि ज़ियाद हिजाज़ का मुक़द्दस का वाली बनना चाहता है, उन्हें उसकी बादशाहत में रहना पसंद न आया, तो उन्होंने यह दुआ कि, ऐ अल्लाह! तू अपनी मख़्लूक़ में से जिसके बारे में चाहता है उसे क़त्ल करवाकर उसके गुनाहों के कफ़्फ़ारे की सूरत बना देता है। (ज़ियाद) इब्ने समया अपनी मौत मरे, क़त्ल न हो, चुनांचे ज़ियाद के अंगूठे में से उसी वक़्त ताऊन की किल्ठी निकल आई और जुम्आ आने से पहले ही मर गया।

(इब्ने असाकीर, मुंतख़बुल कंज़)

(करबला में) एक आदमी ने खड़े होकर पूछा कि क्या आप लोगों में हुसैन (रज़ि०) हैं? लोगों ने कहा हां, है। उस आदमी ने हज़रत हुसैन रज़ि० को गुस्ताख़ी के अंदाज़ में कहा, आपको जहन्नम की बशारत हो। हज़रत हुसैन रज़ि० ने फ़रमाया मुझे बशारतें हासिल हैं, एक तो निहायत मेहरबान रब वहां होंगे दूसरे वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां होंगे जो सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी, लोगों ने पूछा तू कौन है? उसने कहा, मैं इब्ने जुवैरिया इब्ने जुवैज़ा हूं। हज़रत हुसैन रज़ि० ने यह दुआ कि, "ऐ अल्लाह! इसके टुकड़े–टुकड़े करके इसे जहन्नम में डाल दे। चुनांचे इसकी सवारी ज़ोर से बिदकी जिससे वह

सवारी इस तरह नीचे गिरा, कि उसका पांव रिकाब (घोड़े पर बैठने के बाद पैर रखने की जगह को कहते हैं) में फंसा रह गया और वह सवारी तेज़ भागती रही और उसका जिस्म और सर ज़मीन पर घिसटता रहा, जिससे उसके जिस्म के टुकड़े गिरते रहे। अल्लाह की कसम! आखिर में सिर्फ़ उसकी टांग रिकाब में लटकी रह गई।

(हैसमी, 9, 193)

आसमान से अंगूर के टोकरे के साथ दो चादरें भी

हज़रत लैस बिन साद रह० कहते हैं कि मैं हज को गया, मक्का पहुंचकर मैं असर की नमाज़ के वक़्त अबू कुबैस पर चढ़ गया। वहां मैंने एक साहब को दुआ मांगते हुए देखा कि वह

फिर "يَارَبِّ يَارَبِّ"

फिर "يَارَبَّاهُ يَارَبَّاهُ"

फिर "يَااَللّٰهُ يَااَللّٰهُ"

फिर "يَاحَيُّ يَاحَيُّ"

फिर सात मर्तबा, "يَاقَيُّوْمُ يَاقَيُّوْمُ"

يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

कहा और कहने लगा, कि ऐ अल्लाह! अंगूर खाने को दिल चाह रहा है अंगूर दे और मेरी चादरें पुरानी हो गई हैं वे भी दे।

हज़रत लैस रह० कहते हैं खुदा की कसम! उनकी ज़बान से ये लफ्ज़ पूरे निकले भी नहीं थे कि एक टुकरा अंगूरों से भरा हुआ उनके सामने आसमान से उतरा, उसमें दो चादरें भी रखी हुई थीं। हालांकि उस वक़्त सारे अरब में कहीं अंगूर का नाम व निशान नहीं था। उन्होंने अंगूर का एक गुच्छा टोकरे से खाने के लिए निकाला तो मैंने आवाज़ देकर कहा कि इन अंगूरों में मेरा भी हिस्सा है। उन्होंने पीछे पलटकर देखा उनकी नज़र मुझ पर पड़ी मुझसे कहा इसमें तुम्हारा हिस्सा कैसे है मैंने कहा, जब आप दुआ कर रहे थे तो मैं आपकी दुआ पर आमीन कह रहा था यह सुनकर उन्होंने वह गुच्छा मुझे पकड़ा दिया और कहने लगे कि

इसे यहीं बैठकर खाओ, मैंने इसे यहीं पर खाने के लिए मांगा है। घर ले जाने के लिए नहीं। मैंने वह अंगूर लेकर खाए तो बग़ैर बीच के उन अंगूरों का उम्र भर मज़ा न भूला। (रोज़ुल रियाहीन)

एक मर्तबा इब्राहीम ख़्वास रह० जंगल से होकर जा रहे थे उन्हें रास्ते में एक ईसाई मिला, उसने उनसे कहा कि ऐ मुहम्मदी! मुझे भी अपने साथ लेते चलो, उन्होंने उसे अपने साथ चलने की इजाज़त दे दी, कि ठीक है चलो, सात दिन तक हम दोनों भूखे प्यासे चलते रहे, सातवें दिन उस ईसाई ने मुझसे कहा कि ऐ मुहम्मदी! आज कुछ खाने-पीने का इंतिज़ाम करो, तो मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस काफ़िर के सामने आज मुझे ज़लील न कीजिएगा, हम लोगों के खाने-पीने का इंतिज़ाम कर दीजिए, उसी वक़्त आसमान से एक ख़्वान उतरा, जिसमें रोटियां, भूना हुआ गोश्त, ताज़ी खजूरें और साथ में पानी भरा हुआ लोटा भी रखा था। हम दोनों ने उसे खाया-पीया और चल दिए।

सात दिन तक हम लोग फिर भूखे-प्यासे चलते रहे। तो सातवें दिन मैंने उस ईसाई से कहा कि आज तुम खाने-पीने का इंतिज़ाम करो। यह सुनकर वह लकड़ी का सहारा लगाकर आसमान की तरफ़ देखने लगा। फिर उसने अपनी ज़बान से कुछ कहा बस उसी वक़्त आसमान से दो ख़्वान उतरे जिसमें हर चीज़ मेरे ख़्वान से दुगनी थी। यह देखकर मैं हैरान हो गया और रंज की वजह से मैंने खाना खाने से इंकार कर दिया। उस ईसाई ने मुझसे कहा कि आप खाना खा लीजिए, फिर मैं आपको दो खुशखबरियां सुनाऊंगा, मैंने उससे कहा, कि पहले खुशखबरी सुनाओ, फिर मैं खाना खाऊंगा, उसने मुझे बताया कि तुम्हारे लिए पहली खुशखबरी यह है कि मैं मुसलमान हो गया हूं और दूसरी खुशखबरी यह है, कि यह जो आसमान से खाना आया है, यह मैंने अल्लाह तआला से तुम्हारे सदके के तुफ़ैल में मांगा है। (फ़ज़ाइले सदक़ात)

हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं काफ़िले के साथ जा रहा था रास्ते में मैंने एक औरत को देखा कि काफ़िले से आगे-आगे जा रही थी मैंने ख़्याल किया कि यह ज़ईफ़ा इसलिए आगे-आगे जा रही है कि कहीं काफ़िला से छूट न जाए, मेरे पास चंद दिरहम थे, जिन्हें मैं अपनी जेब से निकालकर उसको देने लगा और मैंने

कहा जब काफ़िला मंज़िल पर ठहरे, तो मुझे तलाश करके मिल लेना मैं काफ़िले वालों से कुछ चंदा करके तुझको दे दूंगा, जिससे तुम अपने लिए किराए पर सवारी ले लेना। इसने मेरी बात सुनकर अपना हाथ ऊपर को उठाया, तो उसकी मुट्ठी किसी चीज़ से भर गई, जब उसने अपना हाथ खोला तो वह दिरहम से भरा हुआ था। वे दिरहम उसने मुझे दिए और मुझसे बोली कि तूने जेब से निकाले और मैंने ग़ैब से लिए। (फ़ज़ाइले सदक़ात)

जिस्म के सात आज़ा (हिस्से) कि हरकतों का नाम "अमल है"

मेरे दोस्तो! अल्लाह ने दुनिया का निज़ाम इंसान के अमल के साथ जोड़ा है कि इंसान के जिस्म से जैसा अमल होगा, अल्लाह की तरफ़ उसके साथ वैसा ही मामला होगा। क्योंकि ग़ैबी निज़ाम का ताल्लुक़ अमल से है सबब् से नहीं है। अब यहां पर सवाल यह पैदा होता है कि

अमल किसे कहते हैं?

जिस्म से निकलने वाली हरकत को अमल कहते हैं।

लोग तो बेचारे रोज़ा, नमाज़, हज और ज़कात वग़ैरह ही को अमल समझते हैं। देखो! जिस्म के सात हिस्से (आंख, कान, ज़बान, दिमाग़ हाथ, पैर और शर्मगाह) से जो भी हरकत होगी, उस हरकत का नाम अमल है। इंसान के जिस्म के ये हिस्से अगर अल्लाह के हुक्म पर उसकी मर्ज़ी पर इस्तेमाल होंगे, तो आसमानों के ऊपर से उसे कामयाबी दिलाने वाले फ़ैसले नाज़िल होंगे और ग़ैबी निज़ाम उसकी हिमायत में आ जाएगी और अगर हमने अपने जिस्म का इस्तेमाल अपने मर्ज़ी पर किया, तो ज़िल्लत, तंगी, परेशानियों और बीमारियों से हमें कोई बचा नहीं पाएगा। यह अल्लाह की तरफ़ से तैयशुदा बात है, दुनिया की चीज़ें माल और सामान हमारे पास चाहे जितना हो, फ़रिश्तों के ज़रिए चलाया जा रहा ग़ैबी निज़ाम हमारे खिलाफ़ हो जाएगा, देखो! एक आदमी ने अपनी ज़बान से सिर्फ़ दो बाले झूठ के बोले कि उसके घर पर एक आदमी ने आकर उसके बेटे को पूछा, उसका बेटा घर पर ही था, लेकिन उसने अपनी ज़बान से दो बोल निकाले वह घर पर नहीं है, तो उसकी ज़बान से निकले हुए उन बोल की वजह से वे फ़रिश्ते उनकी तरफ़ आने

वाली बलाओं और मुसीबतों को उनसे दूर करता था, उसके इस अमल की वजह से एक मील दूर चला जाता है, हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि हर इंसान पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर किए जाते हैं जो बलाओं और मुसीबतों को उसकी तरफ़ आने से रोकते हैं लेकिन जब मुक़द्दर में लिखा हुआ फ़ैसला सामने आ जाता है तो ये दोनों फ़रिश्ते उसके पास से हट जाते हैं, (अबू दाऊद)

कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कि जब इंसान झूठ बोलता है तो उसके झूठ की बदबू की वजह से फ़रिश्ता एक मील दूर चला जाता है। (तिर्मिज़ी)

इसी तरह हज़रत बिलाल मुज़नी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: तुममें से कोई शख़्स अल्लाह तआला को खुश करने के लिए अपनी ज़बान से कोई ऐसा बोल निकाल देता है, जिन बोलों को वह ज़्यादा अहम नहीं समझता, लेकिन उन बोलों की वजह से अल्लाह तआला क़ियामत तक के लिए उससे राज़ी होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह करें हम सबको अपनी ज़बान से निकलने वाले बोलों की हक़ीक़त का इल्म हो जाए। जी! सिर्फ़ ज़बान से निकलने वाले बोलों की ताक़त का पता हो जाए कि हज़रत हिश्शाम बिन आस उमवी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम रूम के बादशाह हिरक़्ल के मुहल्ले में पहुंचे और वहां पहुंचकर अपने मुंह से 'ला इलाह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर, के बोल निकाले तो अल्लाह ही जानता है कि उसके महल का बालाख़ाना ऐसे हिलने लगा कि जैसे पेड़ की टहनी को हवा हिलाती है। (बिदाया)

अगर अपनी ज़बान से निकलने वाले बोलों की ताक़त की बात अभी न समझ में आ रही हो तो, इस हदीस से समझने की कोशिश करो। कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कि कोई शख़्स ऐसा नहीं कि वह अपनी ज़बान 'ला इलाह इल्लल्लाह' के बोल निकाले और उन बोलों के लिए आसमान के दरवाज़े न खुल जाएं, यहां तक कि वह बोल सीधा अर्श पर पहुंचता है बशर्तेकि वह गुनाह कबीरा से बचता हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि अगर तमाम आसमान व ज़मीन का एक घेरा हो

जाए, तो भी 'ला इलाह इल्लल्लाह' के बोल इस घेरे को तोड़कर अल्लाह तआला तक पहुंचकर रहेगा। (बज़ाज़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जब कोई शख़्स 'ला इलाह इल्लल्लाह' के बोल बोलता है, तो इन बोलों के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, कि यह बोल सीधे अर्श तक पहुंचते हैं, अर्श के ऊपर नूर का एक सुतून है, जो इन बोलों की वजह से हिलने लगता है, अल्लाह तआला सब कुछ जानने के बावजूद सुतून से पूछते हैं, कि तू क्यों हिल रहा है? सुतून अर्ज़ करता है कि इन बोलों को बोलने वाले की अभी मग़फ़िरत नहीं हुई है, अल्लाह तआला सुतून से कहते हैं, तू ठहर जा। मैंने इसकी मग़फ़िरत कर दी।

देखो! इस बात को यूं समझा जा सकता है कि आपने यहां हिन्दुस्तान से अमरिका में रहने वाले किसी आदमी को फोन लगाया, उसका फोन वाइबरेट (*vibrate*) पर लगा हुआ मेज़ पर रखा है वह 100 ग्राम का मोबाइल आपके फ़ोन मिलाने पर वहां अमरिका में मेज़ पर हिलने लगता है, अगर उसके मोबाइल पर आपका नाम फ़ीड (लिखा हुआ) है तो उसको मालूम हो जाता है कि उस शख़्स को मेरी ज़रूरत है, कौन मुझे फ़ोन कर रहा है।

मेरे दोस्तो! यह तो सिर्फ़ ज़बान से निकले हुए बोल की बात है आंख कान दिमाग़ हाथ पैर और शर्मगाह से होने वाली हरकतों की ताक़त का अभी हमें अंदाज़ा नहीं है। उसी के लिए फ़ज़ाइल की तालीम है, कि हमें पता तो चले कि हमारे जिस्म के सही इस्तेमाल पर आसमानों के ऊपर से क्या फ़ैसला आएगा और अगर हमने अपने जिस्म को अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो आसमानों के ऊपर से क्या फ़ैसला आएगा। कि इस ज़माने में इस बात को मोबाइल या कम्पयूटर से समझा जा सकता है कि मोबाइल या कम्पयूटर का 'की बोर्ड' (*keyboard*) कि इसके जिस बटन पर हाथ रखा जाएगा, उसका नतीजा स्क्रीन (*screen*) पर ज़ाहिर हो जाएगा, ऐसा नहीं है कि कोई अमीर आदमी उस बटन को दबाए, तो कुछ और नज़र आए और ग़रीब दबाए तो कुछ और, मोबाइल या कम्प्यूटर के किस बटन से स्क्रीन पर क्या ज़ाहिर होगा। यह बात मोबाइल और कम्प्यूटर बनाने वाले ने पहले ही बता दी थी, अगर इस तरीक़े से हटकर कोई आदमी मोबाइल या कम्पयूटर का

इस्तेमाल अपनी मर्ज़ी से करेगा, तो परेशानी में फंसेगा। हां यह पक्की बात है, अब इसका इस्तेमाल करने वाला चाहे—

अमीर हो, या गरीब,
पढ़ा लिखा हो या अनपढ़,
शहरी हो या देहाती,
मर्द हो या औरत,

ठीक इसी तरह अल्लाह ने भी इंसान के जिस्म को बनाकर नबियों के ज़रिए से इस्तेमाल करने का तरीक़ा बताया है जो इस तरीक़े पर इस्तेमाल होगा, दुनिया व आख़िरत में वही कामयाब होगा।

इंसान की रोज़ी—रोटी
कपड़ा और मकान
सेहत और बीमारी
इज़्ज़त और ज़िल्लत
कामयाबी और ना—कामियाबी

इन सारी चीज़ों का ताल्लुक़ अल्लाह तआला ने इंसान के जिस्म से ज़ाहिर होने वाली हरकतों से जोड़ा है जिस्म की इन्हीं हरकतों को अमल कहते हैं, इंसान जब ईमान को नहीं सीखता है तो यह अपनी हाजतों और ज़रूरतों को कायनात में फैली हुई चीज़ों से जोड़ लेता है, हालांकि जिब्रील से लेकर चींटी तक के सारी मख़्लूक़ की हर हाजत और हर ज़रूरत को अल्लाह तआला ही अपनी क़ुदरत से पैदा करते हैं और वही पूरी करते हैं।

﴿أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ (البقرة:٢٥٩)

"या तुमको इस तरह का क़िस्सा भी मालूम है जैसे एक शख़्स था (उज़ैर अलैहिस्सलाम) कि, एक बस्ती पर ऐसी हालत में इसका गुज़र हुआ कि उसके मकानात अपनी छतों पर गिर गए थे, कहने लगा कि अल्लाह तआला इस बस्ती (के मुर्दों) को इसके मेरे पीछे किस कैफ़ियत से ज़िंदा करेंगे, सो अल्लाह तआला ने उस शख़्स को सौ साल तक मुर्दा रखा फिर इसको ज़िंदा करके उठाया, और फिर पूछा कि कितनी मुद्दत इस हालत में रहा, उस शख़्स ने जवाब दिया कि एक दिन रहा हूंगा या एक दिन से भी कम, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नहीं बल्कि तू सौ साल रहा है, तो अपने खाने (की चीज़) और पीने (की चीज़) को देख ले कि नहीं सड़ी गली और (दूसरे) अपने गधे की तरफ़ नज़र कर और ताकि हम तुझको एक नज़ीर लोगों के लिए बना दें। और (इस गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र कर कि हम उनको किस तरह तरकीब दिए देते हैं फिर उन पर गोश्त चढ़ा देते हैं फिर जब ये सब कैफ़ियत उस शख़्स को वाज़ेह हो गई तो कह उठा कि मैं यक़ीन रखता हूं कि बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।"

देखो! उज़ैर अलैहिस्सलाम की रूह को इनके जिस्म से सौ (100) साल तक निकाले रखा, तो उज़ैर अलैहिस्सलाम को सौ (100) साल तक खाने–पीने की ज़रूरत पढ़ी और न ही पेशाब–पाखाने की हाजत हुई क्यों? क्योंकि जिस्म से रूह निकाल ली है।

﴿فَضَرَبْنَا عَلٰى آذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا، ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ اَىُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْا اَمَدًا﴾ (الكهف:١٢-١٣)

इसी तरह अस्हाबे कहफ़ के चंद लोग जिन्होंने एक ग़ार में पनाह ली थी, अल्लाह तआला ने तीन सौ नौ (309) दिन तक उनकी रूह को उनके जिस्म से निकाले रखा उन्हें खाने–पीने की ज़रूरत न पढ़ी और न ही पेशाब–पाखाने की हाजत की।

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला हर रोज़ इंसान के जिस्म से उसकी रूह को निकालते हैं और मुक़द्दर में लिखी जा चुकी ज़िंदगी पूरी करने के लिए फिर वापस